"भीड़"

23. "अमृत- नाम भोजन "हरि" (केवल रागमई प्रकाशित आवाज़ विशेष) देई । अरब मधे कोई बिरला लेई ....!"

"सतगुरु नू सभ कोई वेखदा-जेता जगत संसार ।
डिठया मुक्त न होवई-जे कर शब्द न करे विचार ....!"

या तो यह लिखत झूठी है या ये इकट्ठी हुई रंग बिरंगी मत-धर्म-विचार विशेष-विशेष रूपी महान-महानतम गुरु-सतगुरु डेरे-आश्रम इत्यादी रूपी "भीड़ें विशेष-विशेष ....!" कोई

पानी को अमृत साबित करने में मिट रहा है तो कोई लफ़्ज़ों विशेषो को नाम बता कर बांट रहा है । क्या नाम अथवा अमृत कोई भौतिक पदार्थ अथवा सम्पदा विशेष है जिसे बांटा जा सकता है अथवा पिलाया या दिया जा सकता है.... ? इसका फैंसला विचार से प्रत्येक आत्मा विशेष को स्वयं ही केवल अपने हित के लिये अवश्य करना होगा निजी रूप से प्रत्येक काल में । सब कुछ अमृत-नाम अथवा हरि के सिवा कुछ है ही नही तो फिर कब-कहां और कैसे देने-लेने की बात प्रत्यक्ष हो गई यह केवल हरि का विषय है जो केवल हरि द्वारा हरि तक ही तकनीकी रूप से सीमित विशेष है । जब कोई आत्मा विशेष अपने प्रत्येक वैचारिक विशेष विषय को भी व्यवहारिक रूप से हरि के विषय में संपादित विशेष कर देती है प्रत्येक पल विशेष नियोजित रूप से तो वह आत्मा इस नाम-अमृत को सूंघने-चखने अथवा देखने रूपी अनुभव विशेष करने लगती है धीरे-धीरे व्यवहारिक रूप से प्रत्येक पल लगातार आत्मिक तौर पर ....! और उसे इस मुकाम तक पहुंचने के लिये अनन्त काल के अनन्त जन्मों का "पुरूषार्थ विशेष" तकनीकी रूप से कमाना विशेष पढ़ता है लगातार बिना रुके निरन्तर चिन्तन विशेष करते हुए बड़ी ही सावधानी विशेष से तब कहीं जा कर उसे इस अनमोल आवश्यक "आधार" विशेष का भान होता है तकनीकी रूप से "आंशिक तौर" पर और आप हो की दौड़े चले जा रहे हो सतरंगी भीड़ विशेष के पीछे और मान

कर बैठे हो कि शक्लों विशेषो को देखने अथवा सुनने-गाने-नाचने से ही आप को इस की अनुभूती विशेष हो जायेगी और उन महानों की दृष्टि विशेष पड़ते ही आप के अनन्त जन्मों के कुकर्म सभी विशेष महान-महान हवा हो जायेगें और आप सदा के लिये मुक्त विशेष हो देवता-देवी बन बैकुंठों में वास करने लगोगे सदा के लिये ....? प्रत्येक काल में सत्य के पक्ष में कभी भी भीड़ एकत्र नहीं हुई - त्रेते में राम के पीछे बन्दर और भालुओं की भीड़ थी तो द्वापर में झूठ के पक्ष में डेओढ़ी सेना थी और केवल एक पार्थ विशेष को मनाने हेतु "गीता विशेष" प्रत्यक्ष करनी पड़ी तो "रोवह पाण्डव भये मजूर - जिन के स्वामी रहते सदा हदूर" का क्या तकनीकी भावार्थ है स्वंय ही विचार कीजिए ....? कल में तो सच की ऐसी पक्की महान कब्र प्रत्यक्ष की जाती है कि उस पर कफ़न भी अरबों का चड़ता है और फिर उस पर "मन रूपी शैतान" अपनी महान-महान अनुरागी आत्माओं को ले कर ऐसा ताण्डव रूपी नृत्य विशेष करता है कि उस का ये सत्य रूपी कफ़न भी बड़े ऊचें दामों पर बिकता है "सत्यमेव ज्यते" के रूप में ....! सत्य-झूठ का संबंध जीत अथवा हार से तो कदापी भी नहीं ही है प्रत्येक काल में ....! जीत और हार का संबंध केवल कमाई-ताकत अथवा साधनों की अधिकता या कमी से है अर्थात विजय का संबंध केवल संसाधनों रूपी कमाई गयी ताकतों की अधिकता से ही स्थापित होता है ....! कमी को हार का सामना

स्वीकार करना ही पड़ता है प्रत्येक काल में न चाहते हुऐ भी कितना ही "सत्य परायण" होते हुऐ भी हजम विशेष करने के लिये मज़बूर होना ही पड़ता है ....! सत्य-असत्य का संबंध केवल और केवल सुख तथा दुख से ही जुड़ा हुआ है प्रत्येक काल में तकनीकी रूप से । कलयुग में जब प्रत्यक्ष जन्म 25% से घटता हुये जीरो की तरफ बड़ने लगता है तब 75% से अधिक नतीजा पिछले जन्मों के कर्मो-कुकर्मो का आवश्यक फल विशेष होता है जिसे प्रत्यक्ष जन्म के जीरो से 25% तक के व्यवहारों का मान लिया जाता है .....! यही सबसे बड़ा भ्रम अथवा धोखा विशेष है आत्मा के लिये । इसे बड़ी बुद्धी से विचारना तथा सावधानी विशेष से धारण करना अति आवश्यक है प्रत्येक परमार्थी आत्मा विशेष के लिये लगातार सावधानी वर्तते हुऐ । अर्थात झूठ-छल अथवा चालाकी-धोखे-आलस का नतिजा कभी भी सुख-साधन नहीं हो सकता ....! फिर "कल" में तो यही साबित होता आया है ....! इस का कारण है पिछले जन्मों में कमाया हुआ "सत्य" नतीजे के रूप में प्रत्यक्ष व्यवहारिक रूप से प्रगट हो कर कोई विविध बड़ी चालाकी से निरन्तर मिटाता चला जा रहा है और "जीरो होते ही प्लस के" केवल माईनस तुझे नर्कों की तरफ धसीट कर ले जायेगा श् "कोई" विशेष बड़ी चालाकी से ....! और फिर शुरु होगी तेरी ऐसी तड़पने वाली महान "दास्तान" जिसे तू भुलाये बैठा है .....! तू प्रत्यक्ष जन्म में भी झूठ-छल-धोखे और

ब्लातकार द्वारा लगातार दौड़-दौड़ कर कमाने में ही निरन्तर घौर व्यस्त विशेष है ये दृढ़ता से मानते हुऐ कि इन सभी का फल अथवा नतीजा विशेष तो सुख-संसाधन ही साबित हो रहे है ....! एक भीड़ विशेष रंगीन इन्द्रियों की है जिन के पीछे आत्मा दौड़ रही है सत्य अथवा सुख की तलाश में .....! मन लज्ज़त का आशिक इन्द्रियों का गुलाम है और इन विकृत अभावों को सुख मानते हुऐ बुद्धि के ज़रिऐ आत्मा को प्रभावित करता रहता है निरन्तर .....! इसी कारण देखने- सुनने-गाने-नाचने को जीव मुक्ति समझने लगता है यही मन की सूक्ष्म प्रभावित चाल विशेष है आत्मा को ठगने हेतु ....! और जीव इन इन्द्रियों के पीछे चलता हुआ केवल बाहर ही बाहर भटकता हुआ अपना अनमोल जन्म खो देता है । बाहर केवल मन इन्द्रियों के द्वारा जानकारी विशेष-विशेष उपलब्ध होती है किताब-गुरु रूपी "प्रमाणिक" जानकारो के द्वारा न कि व्यवहारिक अनुभव तकनीकी रूप से ....! "घर ही में अमृत भरपूर है मनमुखा साद न आईया ज्यूं कस्तूरी मृग न जाणे भ्रमदा भरमि भुलाइआ" अर्थात अमृत-नाम इस घट यानी के शरीर रूपी घर में ही भरपूर लबालब प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष है तकनीकी तौर पर । पर मन-इन्द्रियों के स्वादों-आलसों में फंसी लुभायमान आत्मा विशेष मनमुखी इस के स्वाद से सदा ही वंचित रहती है । क्योंकि वो तो कस्तूरी की सुगन्ध की दिवानी अंधी मृग

आत्मा की भांति उस की तलाश तो झाड़ियों रूपी विभिन्न धर्म-मत संसारों में ही करती रहती है "पूरे जीवन भर" इस सत्य से अन्जान उसे इसके स्वाद-सुगंध से सदा ही वंचित रहना ही पड़ता है क्योंकि ये सुगंध भरा खज़ाना तो उसके स्वंय के ही नाभी रूपी दसवें द्वार विशेष में प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष ही रहता है .....! "जानकार" के दर्शन-उपदेश-गायन-नृत्य-उच्चारण इत्यादि महान-महान धार्मिक कर्मकाण्डों विशेषों से इस नाम-अमृत का अनुभव कभी भी नहीं होता किसी भी प्रकार तथा काल में किन्ही भी कारणों इत्यादि हेतु केवल नाकरात्मक तकनीकी रूप से अवैधानिक ....! "काहे रे बन खोजन जाई । सरब निवासी सदा अलेपा तोहे संग समाई ।। पुष्प मध्य जिउ बासु बसतु है, माहि जस छाई । तैसे ही हरि बसै निरंतर, घट ही खोजो भाई।।" अर्थात सुख अथवा सत्य की तलाश तुझे बाहर नहीं केवल अपने स्वंय के भीतर ही करनी है लगातार-निरन्तर बिना रुके । जिस की पहली सीढ़ी है "यम तथा नियम" की । इस सीढ़ी पर अपने पैर विशेष दृढ़ किये बिना तू दूसरी सीढ़ी अर्थात अपने अन्तर रूपी आवश्यक दुर्लभ प्रयोगशाला में प्रवेश करना तो दूर रहाए तू पैर भी नहीं रख सकता इसे गांठ बांध ले....! "नउ दर ठाके धावत रहाये दसवें निज़ घर वासा पाये । औथे अनहद शब्द वज़े दिन राती गुरमती शब्द सुणावणिआ ।।" अर्थात "कल" में जो क्रिया

विशेष उलटी हो चुकी है इस दुर्लभ आवश्यक जीवन रथ विशेष की उसे सीधा विशेष करना होगा अपने निजी दुर्लभ आवश्यक लाभ विशेष हेतु अर्थात अमृत-नाम तक पहुंचने के लिये निरन्तर व्यवहारिक प्रयास विशेष करना होगा आत्मा द्वारा मन पर अंकुश विशेष लगाते हुऐ ज्ञान का .... ! तब मन रूपी लगाम द्वारा इन्द्रियों रूपी घोड़ों को नियन्त्रित किया जा सकेगा और केवल तब ही आत्मा मन को साधन बना पोज़िटिव रूप से आगे बढ़ेगी अपने को बाहरी नौ द्वारों से मुक्त करा कर दसवें द्वार की ओर .....! अनन्त लम्बे और व्यवहारिक प्रयासों विशेषो के बाद ही अनन्त जन्मों की मेहनत रंग लायेगी और तुझे ये क्षणिक अनुभव व्यवहारिक विशेष होगा और तब तू अमृतधारी अथवा गुरमुख यानी के नामधारी कहलाने में समर्थ विशेष होगा .....! इस सत्य को पहचान कर आप देखो स्वंय को कि आप इस क्रिया विशेष में कहा पर खड़े हो और क्या कर रहे हो आप को अपनी स्थिति विशेष का ज्ञान हो जायेगा और साथ ही निश्चित नतीजा विशेष भी अनुभव होने लगेगा कि आप ने अब तक क्या खोया है और क्या-क्या प्राप्त करने के लिये दौड़ विशेष महान-महान लगा रहे हो ....! जिस भीड़ ने अपने भले तथा सुरक्षा हेतू संसद का निर्माण कर सासंद नियुक्त किये है उन्ही महानों ने एक ऐसा सिस्टम बनाया है जो दिन रात निरन्तर सभी भीड़ों विशेषो का शोषण तथा हनन विशेष करता है और सब से अधिक असत्य और ब्लातकार

का अनुभव भी इसी महान संसद के सांसदों के बीच ही होता है .....! खरबों खर्च कर ऐसी मशीनों-शस्त्रों का निर्माण किया जाता है जो केवल मनुष्य को मिटाने तथा प्रकृति आवश्यक को हज़म विशेष करने हेतू ही प्रयोग विशेष में लाये जाते है और आवश्यक आधारभूतिक आवश्यकताओं के लिये कीमत भारी वसूल की जाती है हवा-पानी-बिजली-ईंधन-शिक्षा-रोजगार-स्वास्थय-औषधि-यातायात इत्यादी हेतू । इस महान भीड़ का एक ही दावा है लोक-तन्त्र तथा आज़ादी और इन नतीजों में सभ्यता को सभ्य साबित करने में ही निरन्तर घौर व्यस्त विशेष है ये महान महानुभाव जिन का आधारभूतिक सत्य केवल और केवल घूस अर्थात मर्यादाहीनता ही है.....! पशु-परिंदो-जंगलों का संरक्षण और अरबों टन रोज का मांस-लकड़ी-जल-स्वीमिंग पूल-खेल विशेष-विशेष ईंधन का वैधानिक वितरण श् "सांसद की महान मोहर के निहित .....!" इस भीड़ महान के पीछे चल कर आप स्वंय को सुरक्षित अथवा मुक्त विशेष समझ रहें है यही मन का सबसे बड़ा धोखा महान विशेष है....! इस रंगीन भीड़ की "मरीचिका" विशेष अच्छे-अच्छे बुद्धिमान विशेषज्ञों को भी लुभावित कर रही है और आँख मूंद इस के पीछे चलते हुऐ अपने अनमोल मनुष्य जन्म से हाथ धोते जा रहे है .....! इसलिये तनिक ठहरो और सावधानी से विचारो ये विचार भी आप तभी तक कर सकते है जब तक आप के प्राण चल रहें है और आप स्वस्थ्य

विशेष है और आप के पास आवश्यक साधन विशेष भी प्रत्यक्ष प्रचुर मात्रा में उपलब्ध विशेष है .....! इन के अभाव में चलना तो एक तरफ रहा आप का इस बारे में विचार करना भी केवल अपराध ही साबित होगा .....!